''बाणभट्ट की आत्मकथा का नाट्यरुपांतरण : एक अध्ययन''
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को प्रस्तुत

लघुशोध परियोजना प्रबंध

शोध प्रबंध का सारांश

अनुसंधानकर्ता
डॉ. गोविंद बुरसे
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
शिवाजी महाविद्यालय, कन्नड
जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
पीन - 431103

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी आलोचना के आधारस्तंभ, हिंदी निबंध साहित्य के शिखर पुरुष और उपन्यास साहित्य के कालजयी साहित्यकार हैं। वैसे तो उन्होंने बहुत कुछ लिखा है, लेकिन ये तीन शाखायें हिंदी समीक्षा के अध्ययन क्षेत्र की है इसलिए यहाँ मात्र इसी पर विचार किया जा रहा है। द्विवेदी जी ने हिन्दी आलोचना को दिशा दी है। सैद्धान्तिक दृष्टी से भी और अपने आलोचना कार्य द्वारा भी। अपनी बात को बेबाक तरीके से कहना, उसके लिए सशक्त तर्क ढूँढना और उसके लिए संघर्ष करते रहना कोई द्विवेदी जी से ही सीखें। अपनी आलोचना दृष्टि के कारण ही इस महापुरुष ने क्या नहीं सहा। सब कुछ सहकर उन्होंने हिंदी को जो दिया वह बेजोड है। आलोचना में उनके अत्यंत प्रिय विषय रहे है कबीर और धार्मिक इतिहास में भक्ति। उन्होंने कबीर को स्थापित किया और भक्ति साहित्य विश्लेषण में भक्ति को नया आधार प्रदान किया। उनका यह अध्ययन उनके उपन्यासों में भी प्रतिबिंबित हुआ है।

निबंधों में उन्होंने ऐसी श्रेष्ठ रचनाएँ हिन्दी जगत को दी जो मात्र द्विवेदी जी ही दे सकते थे। 'कूटज' हिन्दी जगत को कठिनाईयों से जूझते रहने की और अपना जीवन स्रोत न सूखने देने

की प्रेरणा देता है। 'नाखुन' जैसे छोटे विषय पर कितना गहरा चिंतन किया जा सकता है यह द्विवेदी जी दिखा सकते है। उनका हर निबंध एक विशेष चिंतन लेकर आता है। यह चिंतन उन्होंने बड़े कलात्मक तरिके से उपन्यासों में लाया है। इस बड़ी लंबी साधना और अध्ययन से ही उन्होंने 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचंद्रलेख', 'अनामदास का पोथा' और 'पूनर्नवा' आदि उपन्यास लिखे है।

'बाणभट्ट की आत्मकथा' हिन्दी का कालजयी उपन्यास है। उस के अब तक कई संस्करण प्रकाशित हो चुके है। कई बार पढ़ने पर भी यह उपन्यास एक नयी अर्थदीप्ति प्रदान करता है। ऐसा लगता है कि मानो उपन्यास का एक एक वाक्य, एक-एक संवाद बड़े तराश कर लिखे गए हैं। समूचे उपन्यास की बुनावट इतनी जबरदस्त है कि कहीं भी कोई धागा अलग नहीं दिखाई देता।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमी में लिखा गया यह उपन्यास ऐतिहासिकता और आधुनिकता का सुंदर संगम है। उपन्यासकार ने जगह जगह पर फूटनोट देकर अपनी अध्ययनशीलता का परिचय दिया है। यह एक तरह से उनकी इमानदारी भी है कि वे बताते है ये संदर्भ यहाँ से है। इस महान कृति का नाट्यरुपांतरण राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के अमिताभ श्रीवास्तव जी ने किया है। जब यह नाट्यरुपांतरण पढ़ा तो एक सहज जिज्ञासा मन में निर्माण हुई कि क्या इस विशाल उपन्यास का रुपांतरण और मंचन संभव है। आखिर रुपांतरकार ने किस सैद्धान्तिक आधार पर यह रुपांतरण किया है। क्या उपन्यास के उद्देश्य नाटक के द्वारा संप्रेषित करना संभव है। इस जिज्ञासावश यह शोधकार्य किया । प्रस्तुत शोधकार्य सात शीर्षकों में विभाजित कर संपन्न किया गया है।

शोध अध्ययन का प्रथम अध्याय है 'नाट्यरुपांतरण की संकल्पना और स्वरुप।' इस अध्याय में साहित्य की विभिन्न विधाओं का मंचन, नाट्यरुपांतरण इस विषय पर चर्चा की गयी है। अनुसंधानकर्ता ने यह पाया है कि नाट्यरुपांतरण पर कोई सैद्धान्तिक पुस्तक उपलब्ध नहीं है, फिर भी नाट्यरुपांतरकार ने उपन्यास का नाट्यरुपांतरण किया है। इस अध्याय की सैद्धान्तिक चर्चा इन्ही रुपांतरित कृतियों के आधार पर की गयी है।

शोध अध्ययन के द्वितीय अध्याय में उपन्यासकार हजारीप्रसाद द्विवेदी जी और नाट्यरुपांतरकार अमिताभ श्रीवास्तव जी का सामान्य परिचय दिया गया है।

शोध अध्ययन का तीसरा अध्याय 'बाणभट्ट की आत्मकथा: दो विधाओं में एक कथानक' यह है। इस अध्याय में उपन्यास का कथानक और वह कथानक नाटक में किस तरह आया है यह देखा परखा गया है। नाट्यरुपांतरकार अमिताभ श्रीवास्तव जी ने बड़ी सफलता से पुरा कथानक नाटक में रुपांतरित किया है। उपन्यास बड़ा है और नाटक की अपनी सीमाएँ होती है। नाटककार को समय सीमा का बड़ा ध्यान रखना पड़ता है। विधाओं की इन सीमाओं के कारण कुछ छूट भी गया है। रुपांतरकार ने यह बराबर ध्यान रखा है कि इस छूटने से नाटक के कथानक को क्षति ना पहूँचे। रुपांतरकार ने रत्नावली नाटक का अंश नाटक में जोड दिया है, जिसे खेलने का मात्र संकेत उपन्यास में दिया गया है।

शोध अध्ययन का चतुर्थ अध्याय 'बाणभट्ट की आत्मकथा : विधापरिवर्तन में पात्र और संवाद' यह है। इस अध्याय में मूल उपन्यास के पात्र और नाटक में आए पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। कुछ पात्र नाटक में बढ़ाए गए है, जैसे बाण-1 और बाण-2। यद्यपि संवादों और चरित्र में कोई फर्क नहीं लेकिन दो बाणभट्ट है। कुछ पात्र घटाए भी गए है। संवाद लेखन में रुपांतरकार ने अपनी रचनात्मकता का अच्छा परिचय दिया है। उन्होंने उपन्यास के मूल संवादों को भी बड़ा अच्छा पिरोया है।

शोध अध्ययन का पंचम अध्याय 'बाणभट्ट की आत्मकथा : विधापरिवर्तन में उपन्यास की ऐतिहासिकता का निर्वहन' यह है। इस अध्याय में इतिहास ग्रंथों के आधार पर मूल उपन्यास की ऐतिहासिकता का भी अध्ययन किया गया है। वस्तुत: द्विवेदी जी ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमी का प्रयोग किया है और उसके माध्यम से भारत की चिरंतन समस्याएँ अभिव्यक्त करने की कोशिश की है। कुछ साहित्यिक संदर्भ तो परवर्ती भी है और फूटनोट में उपन्यासकार ने ही यह अभिव्यक्त किया है। उपन्यास की ऐतिहासिकता का सफल निर्वहन नाटक में हुआ है।

शोध अध्ययन का षष्ठ अध्याय 'बाणभट्ट की आत्मकथा: नाट्यरुपांतरण की सफलता' यह है। इस अध्याय में मूल कृति के उद्देश्यों को नाटक में कहाँ तक अभिव्यक्त किया गया है यह

देखा परखा गया है। जैसे कि उपर कहा गया है, यह एक विशाल उपन्यास है और इसके बड़े सशक्त उद्देश्य है। उपन्यासकार भारत की जकडी हुई सामंती व्यवस्था, उसमें शोषित गरीब जनता की स्थिती, नारियों का स्थान, धर्म की भूमिका, शरीर के विकार, भक्ति का स्थान आदि की विस्तार से चर्चा करते है, इन सब में लोककल्याण को प्रधान वस्तु मानते हैं। बाणभट्ट, निपुणिका और भट्टिनी के प्रेमत्रिकोण को भी उपन्यास में बड़ी सुंदरता से अभिव्यक्त किया है। उपन्यास के यह उद्देश्य नाटक में भी अभिव्यक्त होते हैं और इस आधार पर यह रुपांतरण एक सफल नाट्यरुपांतरण है।

सप्तम अध्याय 'उपसंहार' है। इस अध्याय में उपसंहार के माध्यम से शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है, साथ ही शोध संभावनाओं को भी व्यक्त किया हैं।

इस अनुसंधान का अनुसंधान निष्कर्ष यह है कि साहित्य विधाओं का प्रदर्शनकारी कलाओं में रुपांतरण होना लाभदायक है। इससे श्रेष्ठ कृतियों का आस्वादन होगा और प्रबुद्ध समाज बनने में सहायता होगी।

'बाणभट्ट की आत्मकथा' यह उपन्यास, रंगप्रसंग में इसी शीर्षक से प्रकाशित नाटक, अन्य संदर्भ ग्रंथ और पत्र पत्रिकाओं के आधार पर यह शोधकार्य संपन्न हुआ है।

अनुसंधानकर्ता

डॉ. गोविंद बुरसे
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग
शिवाजी महाविद्यालय, कन्नड
जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
पीन - 431103